श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका
શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

दीपावलीकी मंगलमय कामना

अक्तूबर २०११

वर्ष ८३ | श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर | अंक १०

www.krishnapranami.org

श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव पर निज मन्दिरमें प्राकट्य आरती एवं
शिखर पर ध्वजारोहणकी विविध झाँकियाँ ।

श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सवके शुभावसर पर शोभायात्राकी अनुपम झाँकियाँ ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि.सं : २०६८   निजानन्दाब्द : ४३०   बुद्धजी शाका : ३३४

वर्ष : ८३   **अक्तूबर २०११**   अंक : १०

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम- खीजड़ा मन्दिर
जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी लक्ष्मण चैतन्य एवं श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/-   १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१
फोन : (०२८८) २६७ २८२९फेक्स (०२८८) २५५ १३५३
E-mail : navtanpuri@gmail.com /
navtanpuri@krishnapranami.org
website : www.krishnapranami.org /
www.krishnadhamusa.org

शुभ दीपावली

आप सभीको दीपावलीकी हार्दिक शुभकामनायें ।

दीपावली की शुभकामना

जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

धर्म परायण सुन्दरसाथजी !

आप सभीको दीपावलीकी हार्दिक शुभकामनायें व्यक्त करते हुए मुझे अपार हर्षका अनुभव हो रहा है । आपको विदित ही है कि **दीपावली** यह प्रकाशका पर्व है । इस अवसर पर दीपमालायें सजायी जाती हैं । सभी सुन्दरसाथ अपने घरमें, व्यापारिक प्रतिष्ठानमें अथवा कार्यालयमें, मन्दिरमें दीप प्रज्ज्वलित कर पूरे क्षेत्रको प्रकाशसे भर देना चाहते हैं । यह सोचते हैं कि दीपकका यह प्रकाश अन्धकारको दूर कर दे, नकारात्मक तरंगोंको अर्थात् समस्त अशुभोंको दूर कर हमारे घरमें, प्रतिष्ठानमें, कार्यालयमें शुद्धता लाये, शुभगुण लाये जिससे सभी अनर्थ दूर हों और हम पूरे व्यवधानोंको हटाकर सुखपूर्वक जीवन यापन कर सकें । ऐसे शुभ आशयसे दीपक प्रज्ज्ववलित कर पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीसे प्रार्थना करते हैं, हे धनी ! आप हमारे सभी अनिष्टोंको दूर कर हमारे कार्योंमें सफलता प्रदान करें, हमें सर्वप्रकारसे सुखी एवं सम्पन्न रखें, हमारा परिवार सुखी रहे, हमारा व्यवसाय ठीक चले, हमें सम्पत्ति मिले, हमारी प्रतिष्ठा बढ़े..........आदि आदि ।

प्राणी मात्रको सुखकी कामना होती है । मनुष्य सभी प्राणियोंमें श्रेष्ठ होनेसे सुख, शान्ति एवं समृद्धिके लिए कामना करता है । वह इसके लिए प्रयत्न भी करता है और प्रार्थना भी करता है ।

प्राचीन समयसे प्रार्थनायें होती आई हैं, हे परमात्मा ! आप हमें प्रकाशकी ओर ले जायें, सत्यकी ओर ले जायें, अमरत्वकी ओर ले जायें.......आदि आदि । भौतिक कार्योंमें रचा पचा मनुष्य परमात्माको भूल कर लौकिक सुख-दुःख अथवा उलझनोंमें इतना फस जाता है कि कितना समय व्यतीत हो गया इतना भी उसे ख्याल नहीं रहता है । ऐसेमें जब कोई पर्व आते हैं तो वह लौकिक कार्योंसे हट कर परमात्माकी प्रार्थना करने लग

जाता है। इस प्रकार ये पर्व मनुष्यको परमात्माकी ओर प्रेरित करते हैं। दीपावलीका महान पर्व पर्वोंकी शृङ्खलामें अन्यतम है।

दीपावलीके पावन अवसर पर हमें दीपक प्रज्ज्वलित कर भौतिक प्रकाशको विखेरते हुए श्री राजजीसे प्रार्थना करनी चाहिए, हे धनी ! आप हमारे अन्तःकरणके विकारोंको दूर कर हृदयको तारतम ज्ञानके द्वारा इस प्रकार प्रकाशित कर दें कि उसमें आपके प्रेमका सागर लहराने लग जाय और हम इसी प्रेममें मग्न बन कर भौतिक भावोंको भूल जायें।

सुन्दरसाथजी ! तारतमज्ञान ब्रह्मज्ञान है। इससे जन्मजन्मान्तरका अज्ञानरूपी अन्धकार, जिसे अविद्या कहा है, नाश हो जाता है। जिस प्रकार दीपकके प्रकाशसे आस पासका क्षेत्र प्रकाशित होता है और सूर्यके प्रकाशसे पूरी पृथ्वी और अन्यलोक भी प्रकाशित होते हैं उसी प्रकार लौकिक ज्ञानसे थोड़ी जानकारी प्राप्त होती है जबकि ब्रह्मज्ञानसे पातालसे परमधाम पर्यन्तकी जानकारी प्राप्त होती है। इतना ही नहीं इससे तो आत्माका और परमात्माका भी ज्ञान प्राप्त होता है। हृदय प्रकाशित होने पर जब उसमें प्रेमका सागर हिलोरे लेने लगता है तब व्यक्ति व्यक्ति नहीं रहता है, वह आत्मभावमें स्थित होकर ब्रह्मानन्द रसका अनुभव करते हुए आनन्दित हो जाता है।

दीपावलीका यह पावन पर्व हमें इसी आनन्दकी ओर प्रेरित करता है। महामति निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजके सान्निध्यके समय दीपावली पर्वका वर्णन करते हुए कहते हैं,

दीपनो मेलो रे ओच्छव अति भलो,
जिहाँ सिणगार करो धनी सर्व साथ।

दीपावलीके पावन अवसर पर सभी सुन्दरसाथ नूतन शृङ्गार धारण कर सद्गुरुके समक्ष उपस्थित होते हैं और आनन्दित होते हैं।

सद्गुरुके सान्निध्यमें सुन्दरसाथ भौतिक ही नहीं अपितु आध्यात्मिक शृङ्गार करते थे। सद्गुरु उन्हें तारतम ज्ञान प्रदान कर उनके हृदयको प्रकाशित कर देते थे और उन्हें प्रेमलक्षणा भक्तिके रंगमें रंगकर श्री राजजीकी लीलाओंके सागरमें अवगाहन करवाते थे। तभी महामति कहते हैं,

प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी, व्रज तणी आ वार ।

अर्थात् सद्‌गुरु व्रजलीला, रासलीला एवं परमधामकी लीलाको प्रकट कर सुन्दरसाथको उन लीलाओंके रसमें निमज्जित कर देते थे। यह प्रेम ही आत्मिक शृङ्गार है। इसीसे हमें अपना एवं अपने धनीका अनुभव होगा। इससे हमारे और हमारे धनीके बीचके सभी व्यवधान दूर हो जाते हैं। इसलिए कहा हैं,

प्रेम खोल देवे सब द्वार।

हम स्वयंको अपने धनीसे चाहे कितनी ही दूर क्यों न मानते हों किन्तु हृदयमें प्रेमका प्रवाह उमडते ही वह सारी दूरी दूर हो जाती है और हम स्वयंको अपने धनीके सान्निध्यमें ही पाते हैं। इसके लिए ही कहा है,

प्रेम पहुँचावे मिने पलक।

अर्थात् प्रेम हमें क्षणमात्रमें ही अपने धनीके निकट पहुँचा देता है। यह विशुद्ध प्रेम है। यहाँ पर मायाके प्रेमकी चर्चा नहीं है। मायाका प्रेम मोह कहलाता है। मोहमें पड़ने पर व्यक्तिका पतन हो जाता है। मोहमें डूबा हुआ व्यक्ति भवसागरसे पार नहीं हो पाता है जबकि प्रेममें डूब हुआ व्यक्ति भवसागरसे तर जाता है।

महामतिने हमें आत्मिक प्रेमकी बात कही है। हमें इसी प्रेमका शृङ्गार करना है।

दीपावलीका यह पावन पर्व हमें लौकिक घर, व्यापारिक प्रतिष्ठान, कार्यालय आदिको सजानेके साथ साथ हृदयको तारतम ज्ञानके आलोकसे आलोकित कर उसे प्रेमके शृङ्गारसे सजानेके लिए प्रेरणा देता है। यही हमारी दीपावली है।

ध्यान रखें ! हृदयमें प्रेम प्रकट होने पर भौतिक वस्तुओंका आकर्षण घटने लगेगा। यह संसार हमें स्वप्नवत् लगने लगेगा,

उत्पन्न प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन होय गयो संसार ।

जब हमें संसार स्वप्नवत् लगने लगेगा तब हमें परमधामकी यथार्थता समझमें आने लगेगी। इस प्रकार शनैः शनैः हम परमधामका एवं धामधनीका

अनुभव करने लगेंगे। तब हम धाम एवं धामधनीको देखने लगेंगे। धनीके वचनोंको सुनने एवं समझने लगेंगे। अनुमान करें; उस समय हमें कितना आनन्द होगा ? हमारी सभी कामनायें पूर्ण होंगी। हमें सर्व प्रकारसे तृप्तिका अनुभव होगा।

जो आत्मायें इस अवस्थाको प्राप्त होती हैं वे और आगे बढ़ना चाहती हैं। उन्हें श्री राजजीके प्रत्यक्ष दर्शनकी कामना होने लगेगी और वह इतनी तीव्र होगी कि विरहमें परिणत हो जायेगी। विरहकी वेदना जैसी बढ़ती जायेगी धनीसे मिलनकी आतुरता ओर तीव्र बनेगी। श्री राजजी चाहें तो ऐसी आत्माओंको उनके प्रत्यक्ष दर्शनका सौभाग्य प्रदान कर सकते हैं। हम इस सौभाग्यकी कामना कर सकते हैं। दर्शन प्रदान करना या न करना यह तो श्री राजजीकी इच्छा पर निर्भर करता है। हमें ऐसी कामना अवश्य करनी चाहिए।

लक्ष्मीपूजा

दीपावलीके अवसर पर लक्ष्मीपूजाका बड़ा महत्त्व होता है। विशेष रूपसे व्यापारी वर्गके लोग इस अवसर पर अपने घरमें, कार्यालयमें, व्यापारिक प्रतिष्ठानमें लक्ष्मी पूजा करते हैं। लक्ष्मीजी धनकी देवी कहलाती हैं। ऐसे अवसर पर उनकी पूजा होना, उनको आदर देना कहलायेगा। सभीको लक्ष्मीजीका आदर करना चाहिए।

साथमें यह भी समझना चाहिए, क्या हमारी अर्जित(प्राप्त) की गई सम्पत्ति सचमुच लक्ष्मी है ? लक्ष्मीका अर्थ होता है 'श्री' अर्थात् शोभा। इससे यह समझना होगा कि जिस सम्पत्तिसे हमारी शोभामें अभिवृद्धि होती हो, जिस सम्पत्तिमें शक्ति(बरकत) रहती हो वही लक्ष्मी है। इसलिए नीतिपूर्वक अर्जित सम्पत्ति ही लक्ष्मी कहलायेगी।

हमारी सम्पत्ति लक्ष्मी है या नहीं यह निर्णय हम स्वयं कर सकते हैं। हमने इसका अर्जन करते हुए किसीके प्रति अत्याचार किया था, किसीका शोषण किया था अथवा किसीकी विवशता(लाचारी)का लाभ उठाया था ? यदि उक्त प्रश्नोंका उत्तर हाँ में आता है तो हमारी सम्पत्ति लक्ष्मी नहीं है।

ऐसी सम्पत्तिमें शक्ति भी नहीं रहती है और इससे हमें शान्तिका अनुभव भी नहीं होगा। इसलिए कहा है,

नीतिपूर्वक अर्जित की गई सम्पत्ति लक्ष्मी है।

अब सम्पत्तिके विनिमय पर विचार करें। यह बात नितरां स्पष्ट है कि नीतिपूर्वक अर्जित की गई सम्पत्तिका दुरुपयोग नहीं होगा, वह बुरे कार्योंमें नहीं लगेगी। जो व्यक्ति नीतिपूर्वक सम्पत्तिका अर्जन करता है वह उसे बुरे कार्योंमें व्यय नहीं कर सकता है। जो नीतिपूर्वक अर्जित करता(कमाता) है वह उसका उपयोग भी नीतिपूर्वक ही करेगा। यदि किसी कारण वश अथवा विवशता(लाचारी) वश उसे ऐसी सम्पत्तिका उपयोग हेय(बुरे) कार्योंमें करना पड़े अर्थात् कोई व्यक्ति ऐसे व्यक्तिसे बलपूर्वक बुरा काम करवाये तो जो ऐसा कार्य करवायेगा उसका नाश हो जाएगा। किसी भी प्रकारसे उसकी हानि होगी।

तात्पर्य यह है कि नीतिपूर्वक अर्जित की गई सम्पत्तिका सदुपयोग ही होगा दुरुपयोग नहीं। दुरुपयोग करने या करवाने वालेकी हानि अवश्य होगी।

इसलिए सम्पत्तिको कमाना भी नीतिपूर्वक चाहिए और उसका उपयोग भी नीतिपूर्वक करना चाहिए। जिस प्रकार नीतिपूर्वक अर्जित की गई सम्पत्ति लक्ष्मी कहलाती है उसी प्रकार उसका नीतिपूर्वक उपयोग करना अर्थात् सदुपयोग करना उसकी पूजा कहलाता है। लक्ष्मीका सदुपयोग ही लक्ष्मीपूजा है।

दीपावलीके अवसर पर लक्ष्मी पूजाका तात्पर्य यह है कि भौतिक सम्पत्तिका अर्जन भी नीतिपूर्वक होना चाहिए और उसका उपयोग भी नीतिपूर्वक होना चाहिए।

दीपावलीके अवसर पर ही लक्ष्मी पूजा क्यों ?

सम्पत्तिका अर्जन एवं उपयोग सदैव किया जा सकता है और किया भी जाता आ रहा है किन्तु सदैव लक्ष्मी पूजाकी बात न हो कर दीपावलीके समय ही लक्ष्मीपूजाका होना हमें यह शिक्षा देता है कि दीपावलीका पर्व

प्रकाशका पर्व है, यह मात्र भौतिक प्रकाश ही नहीं अपितु आत्मिक प्रकाशका भाव समझाता है। हमें ब्रह्मज्ञानके द्वारा आत्माको प्रकाशित कर जीवन भर परमात्माके सान्निध्यका अनुभव करना चाहिए। किन्तु शरीरको चलानेके लिए भौतिक सम्पत्तिकी भी आवश्यकता पड़ती है। ऐसेमें हमें यह समझना चाहिए कि हमारा मुख्य ध्येय ब्रह्मानन्द रसका पान करना है किन्तु शरीरधारी होनेसे भौतिक वस्तुओंकी भी आवश्यकता पड़ती है इसलिए भौतिक वस्तु भी नीतिपूर्वक अर्जित करनी चाहिए और उसका विनिमय(उपयोग) भी नीतिपूर्वक होना चाहिए। तात्पर्य यह है कि शरीरके रहते हुए आध्यात्मिक सम्पत्तिके साथ भौतिक सम्पत्तिकी भी आवश्यकता रहती है। जिस प्रकार आध्यात्मिक सम्पत्ति परमात्मासे ही प्राप्त होती है इसी प्रकार भौतिक सम्पत्तिके स्वामी भी परमात्मा ही हैं। वह भी हमें उनसे ही प्राप्त होती है। इस बातका हमें ज्ञान होना चाहिए। परमात्मा सत्य हैं इसलिए सत्य व्यवहारसे ही उनसे सम्पत्ति मिल सकती है। सत्य व्यवहारसे प्राप्त सम्पत्तिसे ही सुख प्राप्त होगा। असत्य व्यवहारसे अर्जित सम्पत्तिसे दुःख ही प्राप्त होगा। इसलिए आत्मिक सुख एवं भौतिक सुख दोनोंका मूल सत्य है और सत्य व्यवहारसे ही उनकी प्राप्ति होगी।

दीपावलीसे हमें आत्मिक सुखकी प्राप्तिकी ओर प्रेरणा मिलती है तो लक्ष्मी पूजासे हमें भौतिक सुखकी प्राप्तिका ज्ञान प्राप्त होता है। इसलिए दीपावलीके समय लक्ष्मीपूजाका विधान है।

सन्तों अथवा भक्तोंके लिए सदैव दीवाली कहा जाता है। इससे हमें यह समझना चाहिए कि हम जीवनमें सदैव आत्मिक सुख प्राप्त करें। जब सदैव दीवाली होने लगेगी तो लक्ष्मी पूजा भी सदैव हो जायेगी अर्थात् हम सदैव आत्मिक आनन्दका अनुभव करेंगे तो उस समय हमें भौतिक सुखका भी अनुभव होगा। क्योंकि परमात्मा दयालु हैं वे अपनी आत्माके लिए किसीभी प्रकारकी कमी होने नहीं देते हैं। यह गहन रहस्य है। जो इसे समझ लेता है वह सदैव सुखी रहता है।

जागनी रास

(सद्‌गुरु जयन्ती एवं रासपूर्णिमाके अवसर पर प्रस्तुति)

परमात्माको रसरूप कहा है । **रसो वै सः** अर्थात् वे परमात्मा रसरूप हैं । रसका आश्वादन करने पर ही आनन्दका अनुभव होता है । परमात्मा स्वयं रसरूप हैं और रसका भी स्वयं आस्वादन करते हैं । वे अपनी आत्माओंको भी रसका आस्वादन करवाते हैं । ब्रह्मात्माएँ भी रसरूप ही हैं । इस रसको प्रेमरस कहा गया है । यह मोह नहीं है । जब परमात्मा स्वयं भी रसका आस्वादन करते हैं और श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंको भी रसास्वादन करवाते हैं उस लीलाको रास लीला कहा है । ब्रह्मधाम परमधामकी ब्रह्मीलीला अर्थात् निजलीलाको भी रासलीला कहा गया है और इस जगतमें की गई ब्रह्मीलीलाको भी रास लीला कहा गया है । सामान्यतया वृन्दावनमें की गई लीलाको ही रास लीला समझा जाता है । यथार्थ यह है कि जिस लीलाके द्वारा पूर्णब्रह्म परमात्मा अपनी श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंको रसास्वादन करवाते हैं उसे रासलीला कहा जाता है ।

व्रज और रासकी लीलाको अखण्ड कहा गया है । क्योंकि नश्वर जगतमें सम्पन्न होने पर भी अक्षरब्रह्म द्वारा ये लीलाएँ अपने अंतःकरणमें अंकित की गई हैं । लीला पश्चात् लीला भूमि एवं लीला सामग्रियां अवश्य परिवर्तित हुई हैं किन्तु अक्षरब्रह्मने इन लीलाओंको अपने अन्तःकरणमें अंकित किया है । इसलिए ये लीलायें अखण्ड कही जाती हैं । इसी प्रकार महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि नश्वर जगतमें सम्पन्न होने पर भी अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा एवं ब्रह्मात्माओंकी जागनी लीला भी अखण्ड है क्योंकि इसे भी अक्षरब्रह्म अपने अन्तःकरणमें अंकित कर रहे हैं । इतना ही नहीं ब्रह्मात्माओंके साथ इन लीलाओंमें सम्मिलित नश्वर जगतके जीव भी अखण्ड होंगे अर्थात् विभिन्न मुक्तिस्थलोंमें उनको स्थान प्राप्त होगा । तात्पर्य यह है कि इन जीवोंकी योग्यता, कुशलता एवं उनके द्वारा सम्पन्न

कार्योंकी महत्ताके आधार पर अक्षरब्रह्म उन्हें अपने अन्तःकरण(स्मृति पटल)में स्थान देंगे। इस प्रकार व्रज, रास एवं जागनी तीनों लीलाएँ अखण्ड हैं। इस सर्गमें इस प्रकारकी घटना पूर्वकालमें घटी नहीं हैं,

ए तीन ब्रह्माण्ड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब ।.
इन तीनोंमें ब्रह्मलीला भई, व्रज रास और जागनी कही ॥

(प्रकाश हि. ३७/१०८)

जागनी लीला भी रास लीला ही है। इसे जागनी रास कहा गया है। पूर्णब्रह्म परमात्मा श्रीराजजीने स्वयं प्रकट होकर अपनी आत्माओंको रसास्वादन करवाया है, इसलिए यह रासलीला तो है ही किन्तु तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत होकर ब्रह्मआत्माएँ इस लीलाका आस्वादन करती हुई व्रज, रास एवं परमधामकी लीलाओंका भी आस्वादन कर सकती हैं इसलिए इस लीलाको **जागनी रास** कहा गया है।

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज एवं महामति श्री प्राणनाथजीके अन्दर विराजमान होकर श्रीराजजीने इस लीलामें ब्रह्मात्माओंको रसास्वादन करवाया है। इसलिए इस लीलाकी यह सर्वाधिक विशेषता है कि ब्रह्मात्माएँ व्रज, रास, जागनी एवं परमधामकी सभी लीलाओंका रसास्वादन इसी लीलामें कर सकती हैं। इसके लिए मात्र जागृत होनेकी आवश्यकता है। यथा,

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सुहागिन जोग ।.
तीन लीला चौथी घरकी, इन चारोंका यामें भोग ॥

(कलश हि. २३/१)

इसलिए श्रीकृष्ण प्रणामी धर्ममें जागनीका उपदेश वारंवार दिया है। क्योंकि जागृत होने पर ही रसास्वादन संभव है।

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजीके अन्दर भी श्रीराजजीकी शक्ति विराजमान थी किन्तु प्रधानताकी शोभा श्रीश्यामाजीको प्राप्त थी। इसी प्रकार महामति श्री प्राणनाथजीके अन्दर भी श्रीश्यामाजीकी शक्ति सद्गुरुके

रूपमें विराजमान थी किन्तु प्रधानता श्रीराजजीकी शक्तिकी थी। इसीलिए बुद्धजीकी शोभा निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजीको प्राप्त होने पर भी वह महामतिके द्वारा हरिद्वारमें व्यक्त हुई। इसीलिए महामति कहते हैं,

बुद्धजीकी जोतें कियो प्रकाश, त्रैलोकीको तिमर कियो नाश।
लीला खेले अखण्ड जागनी रास विलास,
भई नई रे नवोंखण्डों आरती॥ (किरन्तन ५६/१५)

अर्थात् श्री बुद्धजीके ज्ञान(तारतम ज्ञान)की ज्योतिने सभीके हृदयको प्रकाशित किया इतना ही नहीं तीनों लोकों(स्वर्ग, मृत्यु पाताल)में व्याप्त अज्ञानरूप अन्धकारको नाश किया। तात्पर्य यह है कि तारतम ज्ञानने स्वर्ग, मृत्यु, पाताल अर्थात् स्वर्गादिलोकों(मृत्युलोकसे सतलोक पर्यन्तके सप्त लोक) एवं पातालादि लोकों(सप्तपाताल)में व्याप्त अज्ञानरूप अन्धकारको दूर किया। इन चौदह लोकोंमें यह ब्रह्माण्ड ही सर्वस्व है, इसके संचालक देवी देवताओंसे लेकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं भगवान नारायण ही परमात्मा हैं .....आदि आदि प्रकारकी भ्रान्ति चली आ रही थी। इसीको अविद्या कहा जाता है। इस जगतमें यही अविद्या व्याप्त थी। बुद्धजीके ज्ञानकी ज्योतिने प्रकट होकर तीनों लोकोंमें व्याप्त इस भ्रान्तिको अथवा अज्ञानरूप अन्धकारको दूर किया। अर्थात् तारतम ज्ञानने यह स्पष्ट कर दिया कि पूर्णब्रह्म परमात्मा क्षर, अक्षरसे भिन्न अक्षरातीत हैं। उनके लिए ही शास्त्रोंमें **एकमेवाद्वितीयम्, एकं सत्, सत्यं परं धीमहि, उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः, अक्षरात् परतः परः, अक्षरातीतोऽयम् पुरुषः .....** आदि वाक्योंका प्रयोग हुआ है। उनको जाने बिना जन्ममृत्युके चक्रसे छुटकारा प्राप्त नहीं हो सकता। तारतम ज्ञानको ही ब्रह्म ज्ञान कहा है। इसीसे सच्चिदानन्द परमात्माका ज्ञान प्राप्त होता है। **तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्द लक्षणम्**। इसी तारतम ज्ञानके प्रकाशमें ब्रह्मात्माएँ अपने प्रियतम धनी परमात्माके साथ जागनी रास लीलामें विलसित होती हैं।

धर्मप्राण सुन्दरसाथजी! निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजने जागनी रासका शुभारंभ किया। वे स्वयं भी रास पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा)से पूर्व चतुर्दशीके दिन प्रकट हुए। आश्विन शुक्ल चतुर्दशी सद्गुरु जयन्ती

है तो दूसरे दिन रास पूर्णिमा। महामति श्री प्राणनाथजीने देश-देशान्तरमें परिभ्रमण कर अनेकों सुन्दरसाथको जागनी रासका अनुभव करवाया। आज उनकी वाणी श्री तरतम सागरमें अवगाहन करते हुए हमें जागनी रासका आस्वादन करना है। यह ब्रह्मवाणी सदैव जागनी रासका अनुभव करवाती रहेगी। आवश्यकता है कि हम इसका अध्ययन-मनन करते रहें और उसे जीवनमें उतार कर धन्य बनें। इन्हीं शुभकामनाओंके साथ सभीको प्रणाम।

धर्म प्रचारकोंकी शिबिर

(२७ से ३१ दिसम्बर २०११)

वर्तमान समयके सभी धर्मप्रचारकोंको सूचित किया जाता है कि आगामी २७ से ३१ दिसम्बर २०११ पर्यन्त श्री ५ नवतनपुरी धाममें एक शिबिरका आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके सिद्धान्त, प्रचार-प्रसारकी रीति, प्रचार-प्रसारमें आ रहे व्यवधान तथा उनके निवारणके उपाय इन विषयों पर विशद चर्चा-परिचर्चा, सम्वाद-परिसम्वाद एवं मार्गदर्शनका कार्यक्रम होगा।

आप सभी सन्तों-प्रचारकोंसे अनुरोध है कि कृपया अपने आगमनकी सूचना पुजारीश्री यमनाथजी शास्त्री (मो. ०९८९८०१६६७७)को देकर अपना नाम अंकित करायें जिससे व्यवस्थामें सुविधा रहेगी।

- सन्तसभा

महामति श्री प्राणनाथजी

(उनकी प्राकट्य तिथि पर विशेष प्रस्तुति)

प्राकट्य : महामति श्री प्राणनाथजीका प्राकट्य गुजरात प्रान्तके सुप्रसिद्ध नगर जामनगरके तत्कालीन मन्त्री श्री केशवराय ठाकुर तथा माता धनबाईके पुत्रके रूपमें मेहेराजके नामसे वि. सं. १६७५(१६१८ ई.) आश्विन कृष्णा चतुर्दशी रविवारके दिन प्रातः ९-०० बजे हुआ था। बाल्यावस्थासे ही उनमें प्रखर प्रतिभा, धर्मनिष्ठा, आत्म-चिन्तन एवं सूक्ष्मावलोकन जैसे विशिष्ट गुण दिखाई देते थे। उनकी शिक्षा भी राजकीय सम्मानके साथ हुई।

गुरुदीक्षा : उनदिनों जामनगरमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आदि आचार्य निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजकी सत्संग-चर्चासे सभी लोग प्रभावित थे। उनमें केशवराय ठाकुरका परिवार भी सम्मिलित था अतः मेहेराजको बारह वर्ष दो माह दस दिनकी अल्पायुमें ही श्री देवचन्द्रजीके दर्शन तथा सत्संगका लाभ प्राप्त हुआ।

श्री देवचन्द्रजी महाराज पांच वर्षकी अवस्थासे ही **मैं कौन हूं तथा यह संसार क्या है ?** इसकी खोजमें लगे थे। उन्होंने इसीलिए अपना गांव उमरकोट छोड़ा और वहांसे कच्छ भूजमें जाकर कुछ वर्ष खोज की फिर जामनगरकी ओर आए। उस समय जामनगरमें श्री श्याम सुन्दरजीके मन्दिरमें कान्हजी भट्ट नामक विद्वान् श्रीमद्भागवतकी कथा करते थे। श्री देवचन्द्रजी महाराजने उनसे चौदह वर्ष पर्यन्त पूरी निष्ठासे कथा सुनी। उसी समय उन्हें अक्षरातीत पूर्णब्रह्मने दर्शन देकर आत्माकी पहिचान करवायी। निजनाम महामन्त्र प्रदान करते हुए उन्होंने परमधामसे आई हुई ब्रह्मात्माओंकी जागनीका कार्य सौंपा तथा स्वयं भी उनके धामदिलमें विराजमान हुए। अब श्री देवचन्द्रजी सत्संग चर्चा करने लगे। जामनगरके तत्कालीन नगर शेठ गांगजीभाई जो उनके साथ ही कानजी भट्टके पास भागवत कथा सुनने जाते थे, सत्संगमें श्री देवचन्द्रजीके प्रथम शिष्य बने। गांगजीभाईने अपने घर पर

ही सत्संग चर्चाकी भी व्यवस्था कर दी । श्री देवचन्द्रजीने करीब नौ वर्ष पर्यन्त अपने घर तथा श्री गांगजी भाईके घरपर रहकर सत्संग चर्चा की(वर्तमान श्री देवचन्द्रजीके घरको श्री राजमन्दिर तथा श्री गांगजीभाईके घरको श्री चाकला मन्दिर कहा जाता है) ।

श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना : श्री देवचन्द्रजी महाराज धर्मपीठकी स्थापना करना चाहते थे । इसके लिए उन्होंने समीपके बगींचेको उपयुक्त चुना जहाँ वे वर्षोंसे घूमने फिरने जाया करते थे । वि. सं. १६८७ के कार्तिकी पूर्णिमाके दिन श्री देवचन्द्रजीने वहाँ पर श्री कृष्ण प्रणामी धर्म–निजानन्द सम्प्रदायके आचार्यपीठके रूपमें श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना की और नित्य प्रति सत्संग चर्चा करने लगे । श्री देवचन्द्रजी जब इस बगीचेमें घूमने जाते थे वहाँ एक खीजड़ा(शमी)का वृक्ष था उन्होंने इसकी छोटी टहनी तोड़कर दातौन की और उसका दूसरा भाग जमीनमें दबा दिया । वही टहनी हरी होकर कुछ वर्षोंमें पेड़ बन गई । वे दोनों वृक्ष आज भी यथावत् हैं । इन्हीं वृक्षोंसे संलग्न कर श्री देवचन्द्रजी महाराजने मन्दिरकी स्थापना की । चर्चाके अवसर पर सुन्दरसाथको परमधामकी जमुनाजीका प्रत्यक्ष दर्शन करवाया । मन्दिर तथा श्री जमुनाजीका प्राकट्य स्थान आज भी यथावत है । खीजड़ाके वृक्षके साथ जुडे हुए होनेसे स्थानीय लोग इसे खीजड़ा मन्दिरके नामसे पुकारने लगे । श्री देवचन्द्रजीने रहनेके लिए एवं गादिके लिए जो पर्णकुटी बनवाई थी उसे आज गादी मन्दिरके रूपमें जाना जाता है यह श्री कृष्ण प्रणामी धर्म निजानन्द सम्प्रदायकी आचार्य गादी है ।

बालक मेहेराजने श्री ५ नवतनपुरी धाममें आकर गुरुदीक्षा ली थी । श्री देवचन्द्रजीने मेहेराजमें अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीके आवेश युक्त परमधामकी इन्द्रावती सखीकी वासनाको परखा और उन्हें निजनाम प्रदान करते हुए अखण्ड परमधामकी ब्रह्मात्माओंकी जागनीसे सम्बन्धित आध्यात्मिक अपूर्व सम्पदाकी गूढातिगूढ चर्चा सुनाई । श्री मेहेराजके मिलने पर श्री देवचन्द्रजीको आत्मातोष हुआ । उन्होंने यह

निश्चय किया कि मेहेराज ही मेरा अवशिष्ट कार्यको पूर्ण करनेमें सक्षम बनेंगे। अन्ततः धर्मका सम्पूर्ण भार उनके हाथों सौंपकर वि.सं. १७१२ भाद्र शुक्ला चतुर्दशीके दिन स्वयं भी आत्मारूपसे उनमें समाविष्ट हुए। मेहेराज श्री देवचन्द्रजीको प्राणनाथ कहते थे। उनके अन्तर्धानके पश्चात् शनैः शनैः लोग श्री मेहेराजको प्राणनाथ कहने लगे सद्‌गुरुने उनको महामतिकी उपाधि दी थी इसलिए कालान्तरमें वे महामति श्री प्राणनाथजीके नामसे प्रसिद्ध हुए।

तारतम्य ज्ञानका चिन्तन करते हुए महामति श्री प्राणनाथजीको शास्त्रादिके रहस्य स्वतः खुलने लगे। इनकी अन्तरात्मा आनंद विभोर हो उठीं। उन्होंने संकल्प लिया, '**ये सुख देउं ब्रह्मसृष्टिको, तो मैं अंगना नार**', '**ब्रह्मसृष्टि और दुनियां देऊं जगाय**', '**सुख शीतल करूं संसार**' आदि आदि।

प्रचार यात्रा : निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजीकी आज्ञासे महामति श्री प्राणनाथजीने अरब देशोंकी यात्रा की थी। वे पाँच वर्ष पर्यन्त वहाँ रहे। वहाँसे लौटकर ध्रोल और फिर जामनगरमें मंत्रीके रूपमें रहते हुए जनताकी सेवा की फिर सम्पूर्ण लौकिक कार्योंको छोड़कर दिव्यज्ञानके प्रचार प्रसारसे अज्ञानजन्य अन्धकारमें भ्रमित आत्माओंको परम शान्ति और अखण्ड सुख प्रदान करने हेतु धर्म प्रचार यात्रामें निकले। जूनागढ़ अहमदाबादसे लौटनेके पश्चात् वे जामनगरसे सीधे दीवबन्दर पहुँचे वहाँसे ठठ्ठानगर, मस्कत, अब्बास बन्दर, नलिया, धोराजी होते हुए सूरत पहुँचे।

सूरतमें वेदान्तके प्रकाण्ड विद्वान एवं वैष्णव सम्प्रदायके धर्मधुरन्धर आचार्योंसे उनकी धर्मचर्चा हुई। सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्मके स्वलीलाद्वैत भाव एवं परिपूर्ण स्वरूपको पहचान कर प्रत्येक मानवको अपनी आन्तरिक निर्मलताकी ओर उन्मुख होकर अपने उच्चतम लक्ष्यकी ओर अग्रसर होना चाहिए, न कि कर्मकाण्ड और बाह्य आडम्बरकी दलदलमें फँसकर अपनी आत्माको और अनुयायीको भी भ्रमित करना चाहिए। इस प्रकार

उपदेश देते हुए महामतिने उन लोगोंको सच्चे वैष्णवके स्वरूपकी पहिचान भी करायी ।

महामतिके दिव्य ज्ञानके प्रकाशमें आनेपर लोगोंके हृदयमें विद्यमान वर्ग और वर्ण भेदरूपी अन्धकार मिट गया । बहुतसे ज्ञानी, ध्यानी, मानी, व्यक्ति अपने सुख वैभव छोड़कर निराभिमानी हो महामति द्वारा प्रदर्शित मार्गपर चलने लगे । महामतिने इन अनुयायियोंको सुन्दरसाथकी संज्ञा दी ।

धर्म समन्वयकी भावना : कुछ समय पश्चात् सुन्दरसाथ समूहके साथ सूरतसे प्रस्थान कर अहमदाबाद सिद्धपुर, बिन्दुसरोवर, पुष्करनाथ होते हुए वि. सं. १७३१ में महामति राजस्थानके मेरता नगरमें पहुंचे । वहाँ जैन साधु लाभानन्द यतिसे धर्मचर्चा हुई । उनके सम्मुख यतिके मन्त्र-तन्त्र सब निष्फल हुए । राजारामभाई तथा झांझनभाई जैसे मारवाडी श्रीमन्त स्वामीजीके शिष्य बने जिन्होंने वर्षों पर्यन्त सैकड़ों सुन्दरसाथके लिए सब प्रकारके खर्चकी व्यवस्था कर स्वजीवनको धन्य बनाया ।

एक दिन सांयकाल बगीचेमें भ्रमण करते हुए महामतिका ध्यान मुल्लाके बाँगकी ओर गया जिसका सूत्र था '**ला-इल्लाह-इल्लिलल्लाह**' । इस पर चिन्तन करते हुए उन्हें लगा कि जिस प्रकार गीता, भागवत एवं उपनिषदोंमें क्षर, अक्षर, तथा अक्षरातीत ब्रह्मकी चर्चा की गई है यह कलमा भी इसीकी ओर संकेत करता है । उन्होंने अनुभव किया भारतीय समस्त शास्त्र तथा मनीषियोंका एक ही स्वर है, '**एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म**' पूर्णब्रह्म परमात्मा एक हैं वे ही अपने अंश अक्षरब्रह्मके माध्यमसे अनेक ब्रह्माण्डोंकी संरचना करवाते हैं तथा आदिनारायण(क्षरपुरुष)के रूपमें तत्तद् ब्रह्माण्डके अधिष्ठाता भी होते हैं । केवल हिन्दू धर्मके ग्रन्थ ही नहीं अपितु विश्वके सभी धर्मग्रन्थ इसी मतके पक्षधर हैं भिन्नता केवल भाषा और शैलीका ही है ।

उन्होंने देखा, हिन्दू और मुसलमानकी लड़ाई भी भाषा और शैलीपर ही आधारित है यथार्थतः दोनोंका लक्ष्य एक ही परमात्मा हैं । सभी धर्मोंका लक्ष्य ही एक परमात्मा हैं । इसलिए उनमें धार्मिक समन्वयके

भाव जागृत हुए। उस समय दिल्लीमें औरंगजेबका शासन था उसने मुस्लिम धार्मिक ग्रन्थोंका गलत अर्थ करते हुए देशमें समता और न्यायके मूल्योंको नष्टकर प्रचण्ड हिंसा और आतंकका वातावरण पैदा किया था। प्रजामें इसके विरोधका नैतिक साहस भी नहीं था। महामतिने निश्चय किया कि अब दिल्ली जाकर सीधे ही औरंगजेबके साथ कुरानके माध्यमसे चर्चाकर उसकी कुनीतिमें परिवर्तन लाया जाय। इसलिए वे वहाँसे आगरा, मथुरा होते हुए दिल्ली पहुँचे।

कुम्भ पर्व : १७३५ में चैत्रका महीना था उन दिनों हरिद्वारमें कुम्भ मेला लग रहा था। भारतवर्षके विभिन्न सम्प्रदायके आचार्य संत महन्त विद्वान आदि सभी एकत्र होनेवाले थे। महामति श्री प्राणनाथजीने विचार किया, सभी धर्माचार्योंसे धर्मचर्चा करनेका यह अच्छा अवसर है। उस समय हिन्दू धर्म विभिन्न सम्प्रदायमें बंटा हुआ था। लोग धर्मके नामपर लड़ाई किया करते थे। उन लोगोंको एक सूत्रमें सूत्रित कर औरंगजेबसे टक्कर लेना ज्यादा सरल रहेगा यह विचार कर वे अपने कुछ शिष्यों सहित हरिद्वार पहुंचे। वहाँ उन्होंने सभी धर्माचार्योंके धार्मिक मत सुने। उन्हें प्रतीत हुआ, प्रायः सभीके मत क्षर जगतकी भूमिकाओंका ही परिचय देते हैं। परमात्माके विषयमें सबका चिन्तन अतिन्यून है। अतः उन्होंने क्षर, अक्षर और उत्तम पुरुषका परिचय करवाते हुए सभीसे कहा, 'सकाम कर्मके बाह्य आडम्बरसे परिवेष्टित होनेपर मनुष्यमें सर्वदा अहंभाव पैदा होगा जिससे वह धर्मके मूल उद्देश्य जीवनका अभ्युदय और आत्माकी निश्रेयस सिद्धि(मोक्ष)को समझ नहीं पायेगा। अतः आवश्यकता है आपसी मतभेदोंको भूलकर परम सत्यके अन्वेषणमें सब एकसाथ अग्रसर हों।

साथमें '**वसुधैव कुटम्बम्**' की भावना, धार्मिक सहिष्णुता, एकेश्वरवाद, परा प्रेम लक्षणा भक्ति आदिका सुन्दर उपदेश देकर वहाँ उपस्थित सभी आर्चार्यों सन्तोंको महामतिने मन्त्रमुग्ध किया। आत्मविभोर हो सभीने महामतिको दिव्य अवतार श्री विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्धके रूपमें स्वीकार कर उनकी आरती की। जिस स्थानपर ब्रह्मचर्चा हुई थी

आज भी वह स्थान हरिद्वारमें **ब्रह्म चबूतरा**के नामसे प्रसिद्ध है ।

दिल्लीका जंग : महामति श्री प्राणनाथजी हरिद्वारसे दिल्ली आए । वे औरंगजेबसे सीधे बातचीत करना चाहते थे किन्तु शराअके आडम्बरकी ओटमें दुनियांको सतानेवाला व्यक्ति सत्य धर्मकी बात सम्मुख होकर नहीं सुन सकता था । महामतिजीने तथाकथित धर्मके रूपको खुली चुनौती दी । जन जागरण अभियान चलाया । ऐसे शिष्य तैयार किए जो धर्मकी वेदीपर स्वयंको न्यौछावर करनेमें हिचकते नहीं थे । उन्हीं दिनों सिखोंके गुरु तेगबहादुरजीकी हत्या हुई थी । वातावरण बड़ा भयावह था किन्तु महामतिने तो पूरी तरहसे कमर कस ली थी । उन्होंने अपने बारह प्रमुख शिष्योंको औरंगजेबके पास भेजा और स्वयंको कुरानके अनुसार इमाम महदी, बाइबलके अनुसार ईसाके द्वितीय अवतार एवं हिन्दू शास्त्रोंके अनुसार निष्कलंक बुद्धके रूपमें सिद्ध किया । स्वयं औरंगजेब एवं जामा मस्जीदके तात्कालीन इमामको इस बातका अनुभव भी हुआ किन्तु शरीयतमें फंसे हुए होनसे वे जन आक्रोशके भयसे भी अपने दृढवादिताको छोड़ नहीं सके ।

छत्रशालकी प्राप्ति तथा हीरेका वरदान : महामतिने सोचा, कट्टरपंथी लोग ज्ञानकी नहीं अपितु तलवारकी भाषा समझेंगे । अतः वे नैष्ठिक योद्धा क्षत्रिय वीरकी तलासमें आमेर, उदयपुर, औरंगाबाद, रामनगर, बुन्दी बुढानपुर आदिके राजाओंको धार्मिक सन्देश देते हुए बुन्देल केशरी छत्रसालको जागृत करनेके लिए वि. सं. १७४० में बुन्देलखण्डकी पावन भूमि पन्ना पहुँचे ।

छत्रसाल भी मुगलोंके साथ लोहा लेनेके लिए किसी समर्थ मार्ग-निर्देशककी प्रतीक्षामें थे । उन्हें कुछ वर्ष पूर्व ऐसा आभास भी हुआ था कि किसी दिव्य विभूतिके दर्शन होंगे । वह यही समय था । मऊके समीप महामति श्री प्राणनाथजीसे इनकी भेट हुई । पर्याप्त साधनके अभावमें छत्रसाल कुछ सोचते हुए भी नहीं कर पाते थे । महामति प्राणनाथजीके दर्शन उनकी शारीरिक शक्ति एवं आत्मबल दोनोंके लिए वरदान सिद्ध हुए । चिर

प्रतीक्षित विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंकके रूपमें महामतिको पहिचान कर छत्रसालने उनेक चरणमें अपना सम्पूर्ण राज्य समर्पित कर शिष्यत्व स्वीकार किया । श्री महामतिने भी छत्रसालको राजतिलक देते हुए महाराजाकी पदवी दी और उनके साधनाभावको समझकर हीरामयी भूमिका वरदान दिया ।

मुगल शासनका अन्त : महामतिसे आशीर्वाद और प्रेरणा प्राप्त कर छत्रसालका उत्साह साहसके साथ बड़ने लगा । उन्होंने औरंगजेबकी सेनाओंके साथ अनेक बार युद्ध किया और विजयी बने । औरंगजेबको कभी-कभी आश्चर्य भी होता था कि एक छोटा सा राजा हमारे अतुल सैन्य बलको परास्त करता है । किन्तु उसे यह भी आभास हुआ था कि यह महामति श्री प्राणनाथजी 'आखिरी जमानेके खाविन्द' की ही करामत है । अतः वह मूक दर्शक सा बना रहा ।

कहा जाता है कि औरंगजेब जब महामति श्री प्राणनाथजीके प्रति बुरी दृष्टि रखने लगा तभीसे वह दिल्लीकी तखतपर नहीं बैठ सका । वह राजधानीसे भागकर दक्षिणकी ओर गया । इस बीच उसके शाहजादेने छत्रसालके साथ युद्ध हेतु अपनी सेना भेजनी चाही उस समय औरंगजेबने पत्र लिखकर उसे समझाया, तुम ऐसा दुःसाहस न करो छत्रसालको '**इमाम महदी**' का साथ है इसलिए युद्धमें तुम निष्फल रहोगे । औरंगजेब दक्षिणसे वापस नहीं आ सका । उसकी मृत्युका भी किसीको पता नहीं चला । दिल्लीकी तखत पर शाहजादा नहीं बैठ सका । इस प्रकार महामतिके प्रतापसे भारतमें सदाके लिए मुगल साम्राज्यका अन्त हुआ ।

धर्मपीठकी स्थापना तथा अन्तर्धान : छत्रसालने यावज्जीवन स्वयंको श्री प्राणनाथजीकी सेवामें लगाया । उनका राज्य निष्कलंक बन चुका था । हीरेका वरदान प्राप्त करनेपर धनधान्यकी भी कमी नहीं रही ।

महामति श्री प्राणनाथजीका आरम्भिक जीवन अपने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके साथ जिसप्रकार श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ श्री ५

नवतनपुरी धाममें व्यतीत हुआ इसी तरह जीवनके अन्तिम दिनोमें भी उन्होंने छत्रसालसे विचार विमर्शकर पन्नाकी ऊंची टेकरी पर झंडा लहराया और वहीं धर्मपीठ श्री ५ पद्मावतीपुरीकी स्थापना की उनके साथ आए हुए सुन्दरसाथमेंसे गृहस्थोंको रहनेके लिए बंगलाजीके चारोंओर स्थान बनवाया । यहींपर ज्ञानचर्चा करते हुए वि.सं. १७५१(१६९४ ई.)में उन्होंने अपनी इहलीलाका संवरणकर समाधी ली ।

मध्यकालीन भारतीय मनीषियोंमें महामति श्री प्राणनाथका अनूठा व्यक्तित्व रहा है। वे राजनैतिक क्षेत्रमें सफल राजनीतिज्ञके रूपमें छत्रसालका नेतृत्व करते थे, सामाजिक क्षेत्रमें अच्छे समाज सुधारक तथा मानवमूल्योंके संरक्षकके रूपमें उभरे एवं धार्मिक क्षेत्रमें एक क्रान्तदर्शी युगपुरुष रहे तो आध्यात्म क्षेत्रमें अक्षरातीत ब्रह्मके आवेशयुक्त होनेसे अपने अनुयायियोंके प्राणनाथ कहलाये । साहित्यकी दृष्टिसे देखें तो वे ऐसे मनीषि हैं जिन्होंने चौदह ग्रन्थोंसे संवलित १८७५८ चौपाई वाली **श्री तारतमसागर** नामक ग्रन्थनिधि जगतको सौंपी। ऐसे महामति श्री प्राणनाथजीकी जन्म जयन्ती पर उन्हें शत शत प्रणाम करते हैं । प्रणाम...!!!

विशेष सूचना

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका' के सम्पूर्ण सदस्य एवं पाठकोंको दीपावलीकी मंगलमय शुभकामके साथ सूचित किया जाता है कि जिनका वार्षिक शुल्क पूर्ण हो गया है और "Renew" से शुरु हो गया है तो कृपया पत्रिका पुनः प्राप्त करनेके लिए ग्राहक नम्बरके (PGY, PGL, PHY, PHL, PFL) साथ आप पत्रिका कार्यालय, श्री ५ नवतनपुरी धाममें मनीऑडर भेज दें। अधिक जानकारीके लिए फोन पर सम्पर्क करें ।

कुणाल व्यास ०८३४७४९७४७४ अथवा ०९३७४१ २२२२८

समाचार दर्पण

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित

श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव २०११

धर्मप्राण सुन्दरसाथजी ! आप सभीको विदित ही है कि महामति श्री प्राणनाथजीके प्राकट्यका उत्सव श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धामके वार्षिक उत्सवके रूपमें मनााया जाता है । इस वर्ष महामतिकी प्राकट्य तिथि २६ सितम्बरसे १ अक्तूबर पर्यन्त श्री ५ नवतनपुरी धाममें भव्य एवं दिव्य उत्सव बड़े ही धूमधामसे मनाया गया ।

महाआरती : महामति श्री प्राणनाथजीके प्राकट्यकी आरती महाआरती कहलाती है । दिनांक २६-९-२०११ को प्रातः १० बजे होनेवाली इस आरतीकी प्रतीक्षा एक वर्षसे ही हो रही थी । अनेक सुन्दरसाथ इसके लिए देश विदेशसे एकत्रित हुए थे । सुन्दरसाथकी संख्या अधिक होनेसे दिनांक २५ सितम्बरसे ही सभा मंचका कार्यक्रम आरम्भ कर दिया गया । रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रममें राजकोटके सुन्दरसाथ द्वारा प्रस्तुत व्रजलीलाकी नाटिका प्रशंसनीय थी ।

दिनांक २६ सितम्बरको प्रातः १० बजे मन्दिरका पर्दा खुला । उस समय उपस्थित हजारों सुन्दरसाथने जयघोषके साथ महामतिके प्राकट्यको बधाया और दर्शन प्राप्त कर चिरकालसे बनी हुई अपनी प्रतीक्षाको शान्त किया । श्री प्राणनाथ प्यारेकी जय ! इस जयघोषके साथ पुष्पाक्षतोंकी वृष्टि हुई । नारियल फोडे गए । जयघोष, घण्टनाद, नगारा आदिके द्वारा पूरा मन्दिर परिसर गूँज उठा । पुजारीजी द्वारा पाँच कपूर आरती सम्पन्न होनेपर पूज्य आचार्य महाराजश्रीने महाआरती की तदनन्तर उपस्थित सन्तजन, ट्रस्टीगण एवं सुन्दरसाथने क्रमशः आरती की । हजारों सुन्दरसाथने आरती एवं दर्शनका लाभ प्राप्त किया ।

ध्वजारोहण : आरतीके पश्चात् पूज्य आचार्य महाराजश्री, कुछ सन्तजन एवं कार्यकर्ताओंने शिखर पर पहुँच कर कलश अभिषेक, पूजन एवं ध्वजारोहण किया । मन्दिरके चारों ओर प्राङ्गणसे लेकर छत पर्यन्त छाये हुए सुन्दरसाथ इस दृश्यको देखकर हर्षित हुए । हर्ष और उल्लासके साथ झण्डागीत गाया गया । चकलेटकी वृष्टि होने पर सुन्दरसाथ झूमने लगे । घण्टों पर्यन्त आरती एवं दर्शनका सिलसिला चालु रहा । तदनन्तर सुन्दरसाथने प्रसाद ग्रहणके लिए भोजनशालाकी ओर प्रस्थान किया ।

शोभायात्रा : इसी दिन सायं चार बजे शोभायात्रा आरम्भ हुई । बैण्ड बाजा एवं धुनकी मधुर सुरावलीके साथ भजन कीर्तन करते हुए नगरजनोंको भी भक्तिरसके रंगमें तरबोर करते हुए हजारों सुन्दरसाथने श्री ५ नवतनपुरी धामसे प्रस्थान किया । मार्गमें प्रेक्षकोंकी भीड़ भी उमड़ रही थी । ठीक ५.३० बजे यह यात्रा श्री प्राणनाथजीकी प्राकट्य भूमि श्री प्राणनाथजी मेडी मन्दिर पहुँची । वहाँ पर पूजन आरती एवं ध्वजारोहण सम्पन्न कर नगरके विभिन्न स्थानोंसे होती हुई यह यात्रा ७.३० बजे श्री ५ नवतनपुरी धाममें लौटी ।

यात्रामें श्री राजश्यामाजीका भव्य एवं सुसज्जित रथ मध्यमें था । श्री राजश्यामाजीकी दिव्य छविके दर्शन कर नगरजन धन्यताका अनुभव करते थे । बीच बीचमें पूजन एवं आरती भी करते थे । रथके आगे बैण्ड बाजा एवं विभिन्न प्रकारकी झाँकियोंसे सुसज्जित बाहन थे । दूसरे रथमें पूज्य आचार्य महाराजश्री विराजमान थे । अन्य विशिष्ट सन्तजन भी रथ एवं बग्गियोंमें शोभायमान थे । रास मण्डली एवं भूंगरीयावाली मण्डली बैण्ड बाजा एवं डीजेके तालमें गायन एवं नृत्यकर आनन्दित हो रही थी । इतनी लम्बी यात्राके पश्चात् भी सुन्दरसाथ परिश्रान्त नहीं लगते थे । भोजनके पश्चात् रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रममें उतने ही उत्साहसे रास एवं गरबामें सम्मिलित थे ।

श्री १०८ पारायण : दिनांक २७-९-२०११ को प्रातः ७.३० बजे श्री तारतम सागरके १०८ पारायणका शुभारम्भ हुआ । मन्दिरकी

परिक्रमामें पारायणकी व्यवस्था की गई थी । पूजन, आरती एवं भोगके पश्चात् पाठ आरम्भ किए गए । इस अवसर पर पूज्य आचार्य महाराजश्री, श्री जगत राजजी महाराज(करनाल), अन्य सन्तजन तथा श्री ५ नवतनपुरी धामके ट्रस्टीजन एवं विभिन्न स्थानोंसे पधारे हुए सुन्दरसाथ सम्मिलित थे । पूज्य आचार्य महाराजश्रीने संक्षिप्त उद्‌बोधनके पश्चात् पाठ आरम्भ किया तदनन्तर सभी पाठ पढ़ने लगे । शृङ्गार आरतीके पश्चात् मञ्चका कार्यक्रम आरम्भ हुआ ।

दैनिक कार्यक्रम : प्रतिदिन प्रातः ५.१५ बजे मंगल आरती, परिक्रमा, प्रार्थना आदि सहित प्रातःकालीन सेवा पूजा होती थी । ७.३० बजे पारायण पूजन आरम्भ होता था । शृङ्गार आरतीके पश्चात् ९.१५ से ११.३० पर्यन्त मञ्चका कार्यक्रम होता था । प्रातःकालीन सभामें प्रतिदिन पूज्य आचार्य महाराजश्री द्वारा वाणी चर्चा, विभिन्न सन्तोंके प्रवचन, वाणी गायन, भजन, कीर्तन आदि होते थे । सायंकालीन सभामें भी ४.०० से ७.०० पर्यन्त इसी प्रकारका आयोजन होता था । रात्रि ८ से १०.३० पर्यन्त रास, गरबा, भजन कीर्तन आदि कार्यक्रम होते थे ।

पूर्णाहुति : दिनांक १–१०–२०११ को प्रातः ७.३० बजे पूर्णाहुतिका कार्यक्रम आरम्भ हुआ । पूजनके पश्चात् अन्तिम प्रकरणका पाठ एवं पूर्णाहुति पूजन आरती भोग आदि सम्पन्न हुए । पूर्णाहुति होते ही छठ्ठी उत्सवके लिए पारायणकी शोभा समेटी गई ।

छठ्ठी उत्सव : प्राकट्य उत्सवकी भांति छठ्ठी उत्सवके लिए भी सुन्दरसाथ बड़े आतुर होते हैं । इस अवसर पर सुन्दरसाथकी संख्या प्राकट्यके अवसरसे कम होती हैं । ठीक ९.०० बजे मन्दिरका प्रागंण गूँज उठा । श्री राजजीकी सवारी धीरे धीरे मन्दिरसे बाहरकी ओर आने लगी । पालखीमें सुशोभित श्री राजश्यामाजीकी शोभा निहारकर सुन्दरसाथ धन्यताका अनुभव करने लगे । सुन्दरसाथने श्री राजश्यामाजीकी सवारीके साथ साथ मन्दिरकी परिक्रमा की । मन्दिरके सम्मुख प्राङ्गमणें थोड़े समयके लिए श्री राजश्यामाजी विराजमान हुए । सुन्दरसाथ उनके दर्शन कर धन्यताका अनुभव करने लगे ।

सभीको ऐसा लगा, वर्षमें एक बार श्री राजश्यामाजी मन्दिरसे बाहर आकर हमें दर्शन देते हैं जिससे हम सब कृतकृत्य हो गए। श्री राजजीकी सवारी मन्दिरमें प्रवेश कर मध्यभागमें विराजमान होने पर उनकी आरती हुई । सभी सुन्दरसाथ आरतीका लाभ प्राप्तकर धन्य धन्य बन गए । तदनन्तर सुन्दरसाथने रासका आनन्द लिया। रासके समय सुन्दरसाथ पूरे मन्दिरकी परिक्रमा कर आनन्दित हुए । तदनन्तर भोजन प्रसाद लेकर सभीने अपने अपने गृहकी ओर प्रस्थान किया।

इस प्रकार इस वर्ष हजारों सुन्दरसाथने श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सवका लाभ लेकर धन्यताका अनुभव किया।

विशेष : इस अवसर पर दिनांक २८-१०-२०११ को श्री राजजीको एक हजार आठ लड्डुओंका राज भोग लगाया गया। राजभोगका प्रसाद प्राप्त कर सुन्दरसाथ अति हर्षित हुए।

इस बार गुजरात सरकारके माननीय मन्त्री, जिल्ला पंचायतके अध्यक्ष, नगरके विधायक, महापौर, उपमहापौर, स्थायी समितिके अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, नगरसेवक आदि पदाधिकारीजन एवं भारतीय जनता पार्टीके जिल्ला अध्यक्ष, शहर अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महासचिव, तालुकाके अध्यक्ष आदि अनेक राजनेताओंने भी उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया।

-कनकराय व्यास तथा योगेन्द्र उप्रेति

• अब तो लाभ लीजिए •

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाको online पढ़नेके लिए
www.krishnapranami.org
श्री तारतम सागर मूल तथा अर्थके साथ online पढ़ने के लिए
www.shritartamsagar.org
श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकामें लेख आदि भेजनेके लिए
E-mail : navtanpuri@gmail.com

अनमोल श्लोक

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रको त्यागकर नयें वस्त्र धारण करता है, इसी प्रकार जीव भी यह नश्वर शरीररूपी वस्त्रको बदलता ही रहता है। नयें शरीर धारण कर लेता है तो जो इस शरीरको ही मैं अथवा स्वयं मानकर बैठा है वह जीवके द्वारा वस्त्र बदलनेकी क्रियाको ही अपना मौत मानता है किन्तु जो इस शरीररूपी वस्त्रको अपनेसे सहसा अलग मानता है, उसको शरीर बदलते न हर्ष होता है न शोक। जो ऐसा विचार करता है कि मृत्यु इस शरीरकी होती है, मेरी नहीं, मैं तो अमर हूँ अविनाशी हूँ, नित्य हूँ, शाश्वत हूँ मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस प्रकारकी आत्मिक दृष्टि प्राप्त करनेका नाम ही जीवन है। उसने सही जीवनको पा लिया। उसकी कभी मौत नहीं हुई। मौत तो उसकी होती है जो पैदा हुआ करता है। तो विचार करें कि क्या आत्मा कभी कहींसे पैदा हुई है, नहीं! आत्मा न कभी पैदा होती है न कभी मरती है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

आत्मा किसी कालमें भी न तो जन्म लेती है और न मरती है, न कभी उत्पन्न होकर नाश होनेवाली है। यह तो अजन्मा है, नित्य है सनातन है और पुरातन है। शरीरके मारे जाने पर भी यह नहीं मारी जाती।

जिस मृत्युसे हम भय खाते हैं, क्या हमने कभी उसे देखा है? उसका स्वाद चखा है? कभी नहीं। फिर हम क्यों भय खाते हैं? जिस प्रकार पुराने घरको छोड़कर नयें घरमें जानेपर कोई दुःख नहीं होता है। उसी प्रकार जो पुराने शरीरको छोड़कर अपनी सारी आत्म शक्तियोंके साथ खुशी-खुशीसे नयें शरीरमें जाता है वही सुखी रहता है। वही आनन्दको

पाता है । उसे मौतका भय नहीं होता । उसे मृत्युके समय कुटुम्बीजनोंका कोई मोह नहीं होता । वह समझता है कि मेरा जीवन मेरे साथ ही जा रहा है मैं किसके लिये रोऊ और किसके लिए चिल्लाउँ ।

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ॥

(गीता १८/५८)

हे अर्जुन ! तू मुझमें निरन्तर मनवाला हो, मेरी कृपासे सब संकटोंको अनायास ही तर जायेगा और यदि अहंकारके कारण मेरे वचनोंको नहीं सुनेगा तो नष्ट हो जायेगा । इसलिये सन्त और महारापुरुष बराबर कहते आ रहे हैं कि मनमें चाहे कितनी प्रकारकी चिन्ताएँ, विषाद और व्याकुलता हो और इन सबके होनेमें चाहे कितने ही कैसे भी कारण क्यों न हों, इन सबका नाश परमात्मा आश्राय ग्रहण करनेसे हो जायेगा ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

श्री कृष्ण अर्जुनसे कहते हैं, हे भारत ! जब जब धर्म सत्य एवं अध्यात्मवादका सूर्य अस्त होने लगता है, सर्वत्र असत्य और पापका बोल बाला होता है तो मैं अपने स्वरूपका सृजन(अवतार) करता हूँ । इस प्रकार सत् पुरुषोंकी रक्षा और दुष्टजनोंका मर्दन करते हुए '**लोक हित**' हेतु मैं समय-समय पर अवतरित होता हूँ ।

एको धर्मः परं श्रेय, क्षमैका शान्तिरुत्तमा ।
विद्यैका परमा तृप्तिरहिंसैका सुखावहा ॥

केवल धर्म ही परम कल्याणकारक है, एकमात्र क्षमा ही शान्तिका सर्वश्रेष्ठ उपाय है । एक विद्या ही परम सन्तोष देनेवाली है और एकमात्र अहिंसा ही सुख देनेवाली है ।

संकलन- योगेन्द्र उप्रेति

जीवनोपयोगी बातें

संकलन – कृष्ण शास्त्री

इस संसारमें प्रत्येक मनुष्य सुख ,शान्ति और परम आनन्द पाना चाहता है। कोई भी यह नहीं चाहता है कि उसके अथवा उसके परिवारको किसी तरहका दुख कष्ट एवं अशान्तिका समना करना पड़े।

परन्तु प्रश्न यह है कि दुखोंसे मुक्ति कैसे मिले ?

किसी भी तरहके दुखोंसे छुटकारा पानेके लिए शरीरका स्वस्थ होना बहुत आवश्यक है। कहा भी है,

''पहला सुख निरोगी काया ''

यह शरीर हमें साधन मिला है इसीलिए जब तक हमारा शरीर निरोगी नहीं होगा हम सुखी नहीं हो सकते हैं। चाहे वह आध्यात्मिक हो या भौतिक सुख हो। ये सुख हमें तभी मिलेंगे जब हमारा शरीर स्वस्थ होगा।

शरीरको स्वस्थ बनानेके कुछ उपायोंका संकलन किया गया है। यदि इसका अनुसरण करेंगे तो हम भी निरोगी हो सकते हैं। यदि शरीर स्वस्थ रहेगा तो भजन, भक्ति, ध्यान, सुमिरनमें मन ज्यादा लगेगा नहीं तो जब भी हम परमात्माके ध्यानमे बैठेगें हमारा ध्यान प्रभुमे नहीं जहाँ शरीरमें पीड़ा होगी वहीं बना रहेगा।

स्वस्थ रहनेके लिए सबसे पहले आहार, विहारका विशेष ध्यान रखना चाहिए। क्योकि आहार और विहार पर ही तो पूरा शरीर निर्भर है। क्या खायें क्या न खायें इस पर पूरा ध्यान देना चाहिए। क्योंकि कितने खाद्य पदार्थ एक साथ नहीं खाये जाते हैं।

खानेके बाद पचानेके लिए विहारकी अति आवश्यकता होती है। विहार करते समय भी एक बात खास ध्यान रखना चाहिए गर्मसे ठंडे स्थानपर और ठंडेसे गर्ममें अचानक नहीं जाना चाहिए।

१ शुद्ध भोजन करना चाहिये कहा भी है,

आहारशुद्धौ सत्वशुद्धि : सत्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः ।.
स्मृतिशुद्धौ प्रतिलम्भो सर्वग्रथिनां विप्रमोक्ष : ॥

भोजनकी शुद्धिसे अन्तकरण निर्मल होता है। अन्तकरणकी शुद्धिसे ध्रुवास्मृति और स्मृतिकी शुद्धिसे समस्त ग्रन्थियोंकी गाँठ खुल जाती है।

भोजन बनाते समय परमात्माको याद करके बनाना चाहिए। क्योकि हम जिस भावसे भोजन बनाते हैं वही भाव हमारे परिवारमें आता है, वही संस्कार हमारे बच्चोंमें आता हैं। इसीलिए भोजन शुद्ध भावसे परमात्माको याद करके बनाना चाहिये। भोजनको चबा चबा कर खाया करें। एक एक ग्रासको ३२ बार चबायें। जितना भूख हो उससे थोडा कम खाएं और भोजन हमेशा प्रसन्न मुद्रामें प्रेमसे करें।

१ सप्ताहमें एक दिन हो सके तो उपवास रखना चाहिये। व्रत वाले दिन हल्का ही काम करें। क्योकि शरीरको भी थोड़ा आराम मिले।

२ समय पर भोजन करें। क्योकि खानेके लिए ही तो इन्सान दिन और रात इतना परिश्रम करता है।

३ जीवनमें कुछ भी घटना घटे या बीमारी आये तो भी धैर्य रखें और कारण जाननेका प्रयत्न करें कि ऐसा क्यों हुआ और दुबारा सावधान रहें।

४ हमेशा सैर करे, व्यायाम करें, प्राणायाम करें, कहा भी है, "**प्राणायामोः महाबलः**" ऐसा करनेसे आप सदा निरोगी रहेंगे।

५ व्यसनसे सदा बचें, व्यसन चाहे जैसा भी हो वह एक न एक दिन रोगी तो अवश्य बनायेगा ही।

६ जितना हो अपना काम स्वयं करनेका प्रयत्न करें। ऐसा करनेसे दो लाभ हैं। एक तो शरीर भी अच्छा रहेगा और किसीपर निर्भर भी नहीं रहना पड़ेगा।

७ किसीकी नकल न करें क्योंकि शरीरकी बनावट सबकी अलग-अलग होती है। किसीके जैसा करनेका प्रयत्न न करें। आप जो कर सकतें हैं वह निष्ठापूर्वक करें।

८ जितना काम हो सके उसे आज ही करें कल पर मत छोड़े। कामका निपटारा करते जाएँ ताकि दिमाग हल्का हो जाए।

९ डॉक्टर और दवाईपर २०% ही भरोसा करें। परहेजपर ८०% भरोसा करें।

१० पेट हमेशा साफ रखें। क्योंकि पेटसे ही सभी बीमारीयाँ पैदा होती हैं।

११ असमयमें खाना, बासी खाना, बार बार खाना, देर रात तक जागना, इच्छाको अनावश्यक बढ़ाना स्वास्थ्यके लिए हानिकारक हो सकता है।

१२ जो भी खाएँ ऋतुके अनुसार खाएँ, जो मौसममें होती है। यह परमात्माका ही क्रम है।

१३ ज्यादातर इन्सान बिमार होता हैं वह, न खानेसे नहीं बलकि ज्यादा खानेसे है।

१४ खानेके लिए मत जीएँ जीनेके लिए खाएँ।

१५ कुछ भी करनेसे पहले जरूर अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए।

१६ समयका सदा आदर करो समय भी तुम्हारा आदर करेगा।

१७ कम बोलें ज्यादा सुनें, सादा जीवन उच्चविचारको अपनायें सुखी हो जाएँगे।

१८ कर्म करें फल पर अधिकार मत जताएं। चलते रहें, बहता पानी ओर चलता जीवन अच्छा होता है।

१९ भोजन और भजन एकान्तमें और शान्तिसे करना चाहिये।

२० ऐसे न कमाओ कि पाप हो जाए
ऐसे न खर्चो की कर्ज हो जाए।
ऐसे न खाओ कि मर्ज हो जाए,
ऐसे न बोलो कि द्वेष हो जाए
ऐसे न चलो कि देर हो जाए॥

सभीके प्रति मंगलमय कामना।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभाग् भवेत्॥

चलें ज्योतिकी ओर

दीपोंका त्योहार अहा ! फिर प्यार लुटाने आया है ।.
जन जीवनमें शुभ प्रकाशके फूल खिलाने आया है ॥
खिली-खिली हैं सभी दिशायें, हंसती हुई बहारें हैं ।.
वन उपवनमें, सबके मनमें, खुशियोंके फौवारे हैं ॥
चलो ज्योतिकी ओर मंत्र यह, कण-कणने फिर गाया है ।.
दीपोंका त्योहार अहा ! फिर प्यार लुटाने आया है ॥
ज्योति पर्वका मर्म छिपा है, मनकी ज्योति जगानेमें ।.
सत्य न्यायके शुभाचरणको, पल प्रतिपल अपनानेमें ॥
जो भी जिया दिया-सम जगमें, मान उसीने पाया है ।.
दीपोंका त्योहार अहा ! फिर प्यार लुटाने आया है ॥
चलो दीप हम वहीं जगायें, अब भी जहाँ अँधेरा है ।.
सुखके मोती वहाँ उगायें, जहाँ दुखोंका डेरा है ॥
यही सुखद संदेश पर्व यह मानवता-हित लाया है ।.
दीपोंका त्योहार अहा ! फिर प्यार लुटाने आया है ॥
श्रमके खिलें फूल, फूलझडी, छूटे अशुभ कल्मषकी ।.
मिट जाये अँधियारी सारी, जन-मनसे दुर्भावोंकी ॥
सबको यही सुपथ दीपकने, जलकर स्वयं दिखाया है ।.
दीपोंका त्योहार अहा ! फिर प्यार लुटाने आया है ॥

दीपावलीकी शुभकामना

आप सभीको दीपावलीकी मंगल कामनायें ।

दीपावलीका यह पावन पर्व आपके जीवनमें सुख समृद्धि एवं ऐश्वर्य लेकर आये जिससे पूर्णब्रह्म परमात्माकी ओर आपका प्रेम भाव बढ़े एवं आप इसी जीवनमें आनन्दका अनुभव कर सकें ।

सुखसमृद्धिमैश्वर्यं ददातु दीपमालिके ।.
सर्वे निरामयाः सन्तु एषैव शुभ कामना ॥

पत्रिका परिवार

भजन

मानव तन क्यों बनाया रे प्रभुजी मानव तन क्यों बनाया.......... टेक ।
पांच तत्त्वका यह शरीर बनाया,........................
हाड़ माँस चर्म रुधिरसे धराया,...............
श्वांस की डोरसे अन्दर यन्त्र चलाया,................
सुख-दुःख भाव मन क्यों बंधाया रे प्रभुजी, ...
मानव तन क्यों बनाया रे ....

काम, क्रोध, मद, लोभमें मन भरमाया,
भोग वासना अन्धकूपमें डाल डूबाया,
घर-परिवार समाजका गलफंद पहाराया,
मायामें डाल भरमाया रे प्रभुजी,
मानव तन क्यों बनाया रे ....

तन-मन-जीवन देकर मुझको सेवा ना दीनी,
अपनी चरण शरण भक्ति न दीनी,................
अपनो प्रेम रोग लगाकर अंतमें कृष्ण,... ....
काहेको दीन बनाया रे प्रभुजी,................
मानव तन क्यों बनाया ....

गुरु शरणमें आया गोविन्द जब,
ब्रह्मज्ञानका तत्त्व सत्य पाया तब,
बुद्धि बल, वैभव की माया टूटी तब,
'कृष्णमणि' गुरु पाया रे प्रभुजी।
राजरसिक गुरु जीवन धन्य बनाया।

गोविन्द प्रसाद चतुर्वेदी, भिवानी (हरियाणा)

Pranami Education LLP
डिपोजिट योजना

प्रणामी एज्यूकेशन LLP से आप परिचित हो गए हैं। इसमें पूँजी निवेशके लिए दो प्रकारकी योजनायें हैं जिनमें आप रु. २५०००/ या उसके गुणांकनमें पूँजी निवेश कर सकते हैं।

१. पहली योजना चार वर्षके लिए है जिसमें ५ प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज देनेका प्रावधान किया गया है। इसमें प्रथम दो वर्ष तक ब्याज नहीं दिया जायेगा और शेष दो वर्षमें १० प्रतिशत दरसे ब्याज दिया जाएगा। इस प्रकार चारों वर्षोंका कुल २० प्रतिशत ब्याज अन्तिम दो वर्षोंमें चुकाया जायेगा।

२. दूसरी योजना आठ वर्षके लिए है जिसमें प्रतिवर्ष ६ प्रतिशत दरसे ब्याज देनेका प्रावधान है। इसमें प्रथम ४ वर्ष ब्याज नहीं दिया जायेगा और शेष ४ वर्षमें प्रतिवर्ष १२ प्रतिशतके दरसे ब्याज दिया जायेगा। इस प्रकार आठ वर्षोंका कुल ब्याज ४८ प्रतिशत होगा जो अन्तिम ४ वर्षोंमें दिया जायेगा।

उपर्युक्त योजनाओंको स्पष्ट रूपसे अंकित कर आवेदन पत्र **Application Form** बनाये गये हैं। जिनको भी इन योजनाओंमें रुचि हो वे कृपया फर्म भर कर उसमें दिए गए निर्देशनोंके अनुसार अपनी धनराशिको बैंकमें जमा करवा सकते हैं। तदनन्तर संस्था थोड़े दिनोंमें आपको प्रमाण पत्र **(Deposit Certificate)** भेजेगी।

–संतसभा

सितम्बर महीनेकी पक्की रसोई सेवा

०१)श्री हरजीभाई हीराभाई पणसारा	जामनगर
०२)धा.वा. मनसुखभाई मूलजीभाई अकबरी	जामनगर
०३)धा.वा. शिवाभाई मनजीभाई कोराट	राजकोट
०४)श्री तारतम सागर प्रशिक्षण पूर्णाहुति समारोह विद्यार्थीगण– (श्री घनश्याम आचार्य, श्री प्रमोद लुईटेल, श्री हितेश प्रणामी, श्री कृष्ण प्रसाद तिमलसेना और प्रेम प्रसाद शास्त्री)	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०५)मोहिनीदेवी हनुमानदास अग्रवाल	बेगूसराय
०६)श्री धनजीभाई भाणजीभाई दोंगा	जामनगर
०७)संत श्री चेतनदासजी महाराज	श्री ५ नवतनपुरी धाम
०८)धा.वा. जिज्ञेशभाई जयंतीभाई तारपरा	जामनगर
०९)धा.वा. राहुलभाई गोविंदभाई भेटारीया	चिखलोदरा
१०)श्री हरीशभाई अरसीभाई पाणखणीया	लंडन(यु.के)
११)धा.वा. केशवजीभाई वीरजीभाई संघाणी	जामनगर
१२)धा.वा. भाणजीभाई मनजीभाई वेकरीया	लालवाडी(जामनगर)
१३)धा.वा. संतोकबेन पोपटभाई सभाया	जामनगर
१४)धा.वा. धनजीभाई वीरजीभाई संघाणी	जामनगर
१५)श्री जोरुभाई भगवानसंग सिसोदिया	कानालूस
१६)धा.वा. अशोकभाई गोवर्धनभाई भण्डेरी	भरतपुर
१७)धा.वा. ओतमबेन हरजीभाई चांगाणी	हरिपर
१८)धा.वा. रुक्मणीबेन मोहनलाल भावसार	गणदेवी
१९)श्री छबिलदास भट्ट	काठमाडौं(नेपाल)
२०)धा.वा. सविताबेन गोवर्धनभाई कनखरा	जामनगर
२१)धा.वा. मोतीबेन शिवाभाई पटेल ह. कैलाशबेन	रामपुरा(कुवायडा)
२२)धा.वा. वसरामभाई पूंजाभाई पादरीया	राजकोट
२३)धा.वा. मगनभाई ठाकरशीभाई रामाणी	जामनगर
२४)धा.वा. सजणबा जेठुभा झाला	राजकोट
२५)धा.वा. प्रागजीभाई रणछोडभाई	गोण्डल

श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव पर पञ्चदिवसीय श्री १०८ पारायणका शुभारम्भ करते हुए प. पू. आचार्य महाराजश्री, संतजन एवं सुन्दरसाथजी ।

श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सवके शुभावसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमकी झलक ।

श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव पर सुन्दरसाथजीको आशीर्वचन प्रदान करते हुए प. पू. आचार्य महाराजश्री ।

RNI No. GUJ BIL /2006/18311

Registration No. GJN-1 / 2009-2011

श्री प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव पर पञ्चदिवसीय श्री १०८ पारायणकी पूर्णाहुति करते हुए प. पू. आचार्यश्री तथा छठ्ठीके अवसर पर आनन्दित होते हुए सुन्दरसाथजी ।

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर(टेनेसी) अमेरिकामें आयोजित श्री कृष्ण जन्माष्टमीकी झांकियाँ ।

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA

SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)